

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 6, मरकुस 3:1-19, चंगाई, सारांश और 12

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मार्क 3:1-19, उपचार, सारांश और 12 पर सत्र 6 है।

नमस्ते, मार्क के सुसमाचार पर काम जारी रखते हुए आपके साथ वापस आकर अच्छा लगा।

हम मार्क के तीसरे अध्याय में प्रवेश कर रहे हैं। कई मायनों में, मार्क का तीसरा अध्याय वहीं से शुरू होता है जहाँ हमने मार्क के दूसरे अध्याय में छोड़ा था। इसलिए हम गलील के इलाके में यीशु के सार्वजनिक प्रचार में हैं।

अगर आपको याद हो, तो मार्क के दूसरे अध्याय के अंत में सब्त के बारे में एक विवाद था। इसका अंत यीशु द्वारा सब्त के उद्देश्य की घोषणा के साथ हुआ, कि सब्त का ईश्वरीय उद्देश्य मानवता को लाभ पहुँचाना था। यह मानवता के लिए एक उपहार था।

धार्मिक नेताओं ने इसे ऐसी चीज़ में बदल दिया है जहाँ मानवता, मनुष्य, ईश्वरीय इरादे के बजाय सब्त की सेवा कर रहा था। तब यीशु ने यह संकेत देकर अपने दावे को पुष्ट किया कि वह, मनुष्य के पुत्र के रूप में, सब्त का प्रभु था और वह वही था जो यह निर्धारित करता था कि क्या सही और उचित था। धार्मिक नेताओं के लिए यह एक बहुत बड़ा बयान है जिनका पेशा, जिनका काम और पेशा यह व्याख्या करना था कि क्या कानून के अनुसार है और क्या नहीं।

तो, इसी विचार के साथ हम मार्क के अध्याय तीन में प्रवेश करते हैं और हम देखते हैं कि यह सब्बाथ विवाद अभी भी समाप्त नहीं हुआ है। इसलिए, मैं यहाँ मार्क के अध्याय तीन की पहली छह आयतों, आयत एक से छठी को देखना चाहता हूँ। एक और बार वह आराधनालय में गया और वहाँ एक आदमी था जिसका हाथ सूख गया था।

उनमें से कुछ लोग यीशु पर आरोप लगाने का बहाना ढूँढ रहे थे, इसलिए वे उस पर नज़र रखे हुए थे कि क्या वह सब्त के दिन उसे चंगा करेगा। यीशु ने उस सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, सबके सामने खड़ा हो। फिर यीशु ने उनसे पूछा, सब्त के दिन क्या करना उचित है अच्छा करना या बुरा करना, किसी की जान बचाना या मारना? लेकिन वे चुप रहे।

उसने क्रोध में चारों ओर देखा और उनके हठीले दिलों को देखकर बहुत दुखी हुआ, उस आदमी से कहा, अपना हाथ आगे बढ़ाओ। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उसका हाथ पूरी तरह से ठीक हो गया। फिर, फरीसी बाहर गए और हेरोदियों के साथ मिलकर यीशु को मारने की साज़िश रचने लगे।

जब हम यहाँ मार्क के अध्याय तीन को देखते हैं, तो यह तुरंत स्पष्ट नहीं होता कि वे लोग कौन हैं जो यीशु पर आरोप लगाने के लिए कारण ढूँढ रहे हैं। हम एक तरह से दूसरे दृश्य में चले जाते हैं, बस इस परिचय के साथ कि वह एक और बार आराधनालय में गया था। लेकिन पिछले प्रकरण को देखते हुए जहाँ यह फरीसी थे जो यीशु पर सब्त के उल्लंघन का आरोप लगा रहे थे, मार्क स्पष्ट रूप से हमें बता रहा है कि यह वही समूह है।

वास्तव में, जब लूका इसे याद करता है, तो वह स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि वे फरीसी और शिक्षक हैं। यह दिलचस्प है क्योंकि आराधनालय में, यीशु इस चर्चा में प्रवेश करने जा रहा है कि क्या करना उचित है या क्या नहीं। यह सूखे हाथ वाले इस आदमी के ठीक होने से संबंधित है।

मुझे लगता है कि यह समझना और संदर्भ स्थापित करना महत्वपूर्ण है कि द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म में, कम से कम अगर हम इस पर मिशना पर भरोसा करते हैं, तो जीवन को बचाने के लिए चिकित्सा करने का मुद्दा सब्बाथ पर अनुमति दी गई थी। इस पर बहुत बहस हुई, लेकिन मिशना ने निष्कर्ष निकाला कि जब भी जीवन संदेह में होता है, तो वह खतरा सब्बाथ पर हावी हो जाता है। ऐसी अन्य चीजें हैं जो काम न करने की सब्बाथ आवश्यकता को खत्म कर देती हैं।

उदाहरण के लिए, दाइयाँ सब्त के दिन काम कर सकती थीं, जो यह जानना अच्छा है कि जन्म देने वाली महिला को सूर्यास्त तक इंतजार नहीं करना पड़ता था। सब्त के दिन खतना करने की भी अनुमति थी। मुझे लगता है कि कम से कम मिशना के अनुसार, खतना एक पवित्र कार्य है।

यह वाचा सम्बन्ध का कार्य था, और इसलिए यह वास्तव में सब्त के दिन किया जाने वाला एक उचित कार्य था। मैंने मंच तैयार किया, क्योंकि मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि हम यह न सोचें कि द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म के भीतर, सब्त के दिन कोई कार्य न करने की उनकी समझ का अर्थ किसी व्यक्ति को खतरे में डालना भी है। हम उस माहौल में नहीं थे।

इसके अलावा, इस बात पर चर्चा करने के लिए, हालांकि, इस आदमी की जान को कोई खतरा नहीं है। शूल के हाथ पर मौजूद आदमी को उस दिन आराधनालय में मरने का कोई खतरा नहीं है, और हम इस पर वापस आएंगे। यह पहली बार नहीं है जब हमने सब्त के दिन चंगाई देखी है।

हम मार्क के सुसमाचार में यीशु द्वारा सब्त के दिन चंगाई के दो अन्य उदाहरणों के बारे में जानते हैं। भूत भगाने के बारे में आप जो सोचते हैं, उसके आधार पर, कैपरनहूम में वह दिन है जो मार्क अध्याय 1 में शुरू हुआ था। याद रखें, आराधनालय के बीच में एक आदमी था जो खड़ा था और एक अशुद्ध आत्मा से भरा हुआ था, और यीशु ने उस दुष्टात्मा को बाहर निकाल दिया। कोई यह तर्क दे सकता है कि यह सब्त के दिन स्वीकार्य माना जाने वाला कार्य रहा होगा क्योंकि वह आराधनालय का उल्लंघन कर रहा था, और इसमें एक सुरक्षात्मक गुण रहा होगा।

बेशक, उस दिन बाद में, पतरस की सास के घर में, उसे बुखार हो जाता है, और यीशु उसे सब्त के दिन ठीक कर देता है। लेकिन यह एक निजी घटना थी, और इस बात का कोई संकेत नहीं था कि यह सार्वजनिक रूप से और व्यापक रूप से ज्ञात था कि ऐसा हुआ था। इसलिए, हालांकि हम मरकुस के पाठक के रूप में जानते हैं कि यीशु ने सब्त के दिन पहले ही चंगा कर दिया है, कि

वह सब्त के दिन चंगा करने में पूरी तरह से सहज महसूस करता है, यह उतना स्पष्ट नहीं है कि फरीसी जानते थे कि उसने ऐसा किया था, कम से कम मरकुस के सुसमाचार में तो ऐसा ही है।

यह स्पष्ट है कि फरीसी उससे चमत्कार करने की उम्मीद करते हैं। मुझे लगता है कि यहाँ एक विडंबना है कि वे इस स्थिति में हैं, वे इस आराधनालय में हैं, वे जानते हैं कि वहाँ एक आदमी है जिसका हाथ सूख गया है, और उनमें से कुछ यीशु पर आरोप लगाने का कारण ढूँढ रहे थे। इसलिए, वे यीशु के खिलाफ़ कारण खोजने के इरादे से सब्त के दिन आराधनालय में आए हैं।

हम मार्क में ऐसा होते हुए देख रहे हैं। उदाहरण के लिए, वह पापियों के साथ क्यों खाता है? वह कर वसूलने वालों के साथ क्यों खाता है? वह शिष्यों को उपवास न करने की अनुमति क्यों देता है? हम इन आरोपों को देख रहे हैं। और इसलिए अब वे आराधनालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए नहीं आए हैं।

वे मुख्य रूप से यह देखने के लिए यहाँ आए थे कि क्या वे यीशु को फँसा सकते हैं। और यहाँ तक कि विशेष रूप से, उन्होंने यह देखने के लिए उस पर बारीकी से नज़र रखी कि क्या वह सब्त के दिन उसे चंगा कर सकता है। तो यह हमारे लिए एक परिप्रेक्ष्य स्थापित करता है कि फरीसी वहाँ क्यों थे।

उन्हें कोई परवाह या इरादा नहीं है, वे उम्मीद नहीं कर रहे हैं कि यह आदमी ठीक हो जाएगा। वे वास्तव में उम्मीद कर रहे हैं कि यीशु उस आदमी को ठीक कर देगा, उस आदमी के लाभ के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि वे यीशु पर सब्त के दिन काम करने का आरोप लगा सकें। आप उनके इस बारे में उनके पक्षपाती दृष्टिकोण को देखना शुरू कर देते हैं।

और फिर, यीशु ने एक सवाल पूछा। वह बहस में शामिल हो गया। और उसने सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, सबके सामने खड़ा हो जाओ।

यूनानी भाषा में इसका मतलब है कि सभी के बीच में खड़े हो जाओ। तो, समझिए कि यहाँ क्या हो रहा है। यीशु ने जानबूझकर जो कुछ करने जा रहे थे, उसे एक बहुत ही सार्वजनिक घटना बनाने का फैसला किया।

वह सेवा समाप्त होने तक प्रतीक्षा नहीं कर रहा है, बल्कि सूखे हाथ वाले व्यक्ति को घर वापस बुला रहा है, और फिर उसे वहीं ठीक कर रहा है। यह वही है जिसके बारे में हम पूरे समय बात करते रहे हैं। यीशु इस बारे में बहुत ही स्पष्ट इरादे रखता है कि वह कब क्या करता है और किस कारण से करता है।

हमने देखा कि लकवाग्रस्त व्यक्ति को चटाई पर लिटाया गया था। यीशु ने उसे चंगा करने से पहले स्पष्ट रूप से कहा, " तुम्हारे पाप क्षमा हुए हैं।" उसने लकवाग्रस्त व्यक्ति के चंगाई को पापों को क्षमा करने की अपनी शक्ति की घोषणा के साथ जोड़ना चुना।

यहाँ, वह सब्त के दिन आराधनालय में बहुत ही सार्वजनिक तरीके से चंगाई करने का चुनाव करता है। इसलिए वह उस आदमी को खड़ा करता है। और फिर, वह जो करने जा रहा है उसे सब्त के उद्देश्य के बारे में अपने प्रश्न से जोड़ता है।

में, वह एक प्रश्न के साथ दो पक्षों को खड़ा करता है। वह पूछता है, सब्त के दिन क्या वैध है? तो वह भाषा, जो सब्त के दिन वैध है, उसे इस बहस के संदर्भ में रख रही है कि कानून के अनुसार सब्त के दिन क्या करने की अनुमति है और क्या नहीं। कानून से तात्पर्य मूसा के कानून और पवित्रशास्त्र और पुरानी परंपरा की समझ से है।

तो, वह इसे स्थापित करता है। सब्त के दिन क्या वैध है? अच्छा करना या बुरा करना? अब, मुझे यह प्रश्न बहुत दिलचस्प लगता है क्योंकि बुराई करना कभी भी वैध नहीं है। किसी भी दिन बुराई करना वैध नहीं है, सब्त के दिन तो बिलकुल भी नहीं।

और इसलिए, उस प्रश्न की प्रकृति लगभग पूर्ण सहमति की मांग करती है। वहां मौजूद हर कोई कहेगा कि वे इसे लगभग इस अर्थ में देखेंगे कि, ठीक है, सब्त के दिन बुराई करना वैध नहीं है। और इसलिए इसका एक सामान्य रूप है, यहां तक कि सहमति प्राप्त करने, अच्छाई करने, अच्छा करने और सब्त के दिन के सवाल पर बहस करना।

इन दोनों को एक साथ जोड़ना। और कैसे सब्त के दिन बुराई करना एक बेतुका विचार है, यह अभिशाप है। जिस तरह से शादी की दावत के दौरान उपवास करना एक बेतुका विचार है, उसी तरह सब्त के दिन बुराई करना भी एक बेतुका विचार है।

और फिर, वह अगले प्रश्न पर आगे बढ़ता है। निहितार्थ यह है कि सब्त के दिन क्या वैध है? किसी की जान बचाना या किसी की हत्या करना? तो, अब मेरे पास दो अन्य प्रकार के प्रश्न हैं। किसी की जान बचाने के साथ अच्छाई को जोड़ना, और हत्या के साथ बुराई को जोड़ना।

अब, सवाल यह है कि क्या सब्त के दिन किसी की जान बचाना वैध है। यह एक सक्रिय सवाल था, और जैसा कि मैंने पहले कहा, मिशनाह और रब्बिनिक यहूदी धर्म इस तथ्य पर सहमत हो गए हैं कि, हाँ, सब्त के दिन किसी की जान बचाना वैध है। लेकिन हत्या करना कभी भी वैध नहीं है। और निश्चित रूप से सब्त के दिन हत्या करना कभी भी वैध नहीं है।

और इसलिए, यह दिलचस्प है। तो, वह इस अच्छाई और बुराई को ले रहा है, एक जीवन को बचा रहा है, और बहुत ही स्पष्ट शब्दों में, इस द्वंद्व को मार रहा है। और मुझे लगता है कि इस प्रगति में जो बात सामने आ रही है वह यह है कि बुराई और हत्या एक साथ काम कर रहे हैं, अच्छाई और एक जीवन को बचाना एक साथ काम कर रहे हैं, बहुत ही मजबूत द्वंद्व में, कि कोई बीच का रास्ता नहीं है।

वह इस चमत्कार को स्थापित कर रहा है जिसे वह इसी द्वंद्व के भीतर करने वाला है। और ध्यान दें कि वे चुप रहते हैं। तो, यह सवाल पूछना कि सब्त के दिन क्या वैध है, अच्छा करना, बुरा करना, किसी की जान बचाना या मारना?

और वे, जो उसे परखने की कोशिश कर रहे हैं, चुप रहते हैं। उस समय कोई प्रतिक्रिया न देना यह दर्शाता है कि ये धार्मिक नेता जानते हैं कि वे वास्तव में कुछ भी नहीं कह सकते। क्योंकि उस समय विरोध की आवाज़ उठाने का मतलब होगा उस द्वंद्व के पक्ष में खड़ा होना जिसे यीशु ने स्थापित किया है।

यीशु यहाँ एक मास्टर वाद-विवादकर्ता हैं। उन्होंने दो श्रेणियाँ स्थापित की हैं, और निहित रूप से, उन्होंने खुद को जीवन की पुष्टि करने वाली, अच्छाई की पुष्टि करने वाली श्रेणी में स्थापित किया है। और इसलिए यीशु के खिलाफ कुछ भी कहना लगभग खुद को बुराई और हत्या की श्रेणी में डाल देगा।

और इसलिए, वे कोई जवाब नहीं दे पाते। वे जवाब देने के बजाय चुप रहते हैं। और यह तथ्य कि वे जवाब नहीं देते, यह दर्शाता है कि वे यीशु और यीशु जो कर रहे हैं, उसकी पुष्टि करने से कितने दूर हैं।

वे समर्थन में आवाज़ उठाने से भी इनकार करते हैं, हाँ, यीशु, आप सही कह रहे हैं। केवल भलाई करना वैध है और केवल किसी की जान बचाना वैध है। लेकिन यह तथ्य कि वे कुछ भी कहने से इनकार करते हैं, यह दर्शाता है कि उनका असली उद्देश्य यह समझने या चर्चा में शामिल होने की कोशिश भी नहीं करना है कि सब्त के दिन क्या करने की अनुमति है या नहीं।

उनका असली उद्देश्य केवल यीशु के विरुद्ध खड़ा होना है। और यह पद 5 में यीशु की ओर से प्रतिक्रिया को दर्शाता है। उसने क्रोध में चारों ओर उनकी ओर देखा, उनके हठी दिलों से बहुत दुखी हुआ। यह, मार्क में, एक बहुत ही दुर्लभ भावना है।

मरकुस में यीशु को देखकर हमें बहुत सारी भावनाएँ मिलती हैं। मरकुस में यीशु के मानवीय गुणों पर ज़ोर दिया गया है। लेकिन यह एकमात्र ऐसा समय है जब मरकुस में यीशु द्वारा क्रोध को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है, यीशु के क्रोधित होने से।

मार्क के सुसमाचार में पहले एक विवादित पाठ्य भिन्नता है जहाँ यह क्रोध या करुणा से प्रेरित है। लेकिन यहाँ, यह बहुत, बहुत स्पष्ट है। और ध्यान दें कि वह किस बात पर क्रोधित है।

वह उनकी ज़िद पर नाराज़ है। इसका ज़्यादा बेहतर अनुवाद उनकी ज़िद के बजाय उनके दिलों की कठोरता हो सकता है। दिल की कठोरता प्रतिरोध को व्यक्त करने का एक बहुत ही मुहावरेदार तरीका है; ईश्वर के प्रति प्रतिरोध अक्सर आध्यात्मिक अंधेपन के साथ होता है।

पुराने नियम में जिन समूहों के हृदय में कठोरता थी, वे समूह थे जिन्होंने परमेश्वर के कार्यों का हठपूर्वक विरोध किया था, और उनके हठीले प्रतिरोध का परिणाम यह हुआ कि वे देखने या समझने में असमर्थ हो गए। तो, आपके पास यह द्वंद्व काम कर रहा था। हम इसे निर्गमन 4, निर्गमन 7, निर्गमन 8 में देखते हैं। मेरा मतलब है, फिरौन, यहाँ फिरौन की बात हो रही है।

2 इतिहास 36, यिर्मयाह 3, यिर्मयाह 7 और 13. पौलुस ने रोमियों 11 और 2 कुरिन्थियों 3 में खुद भी इसी तरह के वाक्यांशों का इस्तेमाल किया है। और इसलिए, यीशु ने जब उन्हें कुछ नहीं

कहते देखा, तो वह बहुत क्रोधित हो गया। यहाँ ये धार्मिक नेता हैं जो अभी-अभी जो कहा है, उसे पुष्टि करने से इनकार करते हैं।

यह उनके हृदय की कठोरता का संकेत है। अब, हृदय की कठोरता, यह एक भूमिका निभाने जा रही है क्योंकि हम मार्क के सुसमाचार के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। हम इसे अन्यत्र भी देखेंगे।

और उनके हृदय की कठोरता पर क्रोधित होकर, यीशु, एक बार फिर उनके हृदय की स्थिति के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर रहे हैं। यह उस बात पर वापस जाता है जिसके बारे में हमने पहले बात की थी कि कैसे यीशु वह करने में सक्षम है जो केवल परमेश्वर से जुड़ा है, जो कि एक व्यक्ति के हृदय को समझना है। लेकिन साथ ही, यह भाषा फरीसियों और धार्मिक नेताओं को फिरौन के पक्ष में, यिर्मयाह में निर्वासन के संबंध में कारण और दुश्मनों के पक्ष में, इस्राएलियों, यहूदी लोगों के पक्ष में खड़ा कर रही है, जिन्हें कठोर बना दिया गया है।

और हमने ऐसा कई बार होते देखा है। हमने इसे अध्याय 2 में देखा था जब यीशु पवित्र रोटी और दाऊद के प्रश्न की स्थिति पर चर्चा कर रहे थे और क्या आपने नहीं पढ़ा। हम इसे मार्क के बाकी हिस्सों में देखेंगे, जहाँ यीशु लगातार धार्मिक नेताओं को रखता है और उन्हें उन इस्राएलियों के साथ जोड़ता है जो अवज्ञाकारी थे या बुतपरस्त तरीकों के अनुयायी थे, जो पूरे जंगल में बड़बड़ाते और शिकायत करते थे।

लेकिन वह लगातार वर्तमान नेतृत्व को बुरे लोगों के साथ जोड़ रहा है, अगर आप चाहें तो पुराने नियम से। और इसलिए यहाँ वह क्रोधित है। और मुझे लगता है कि क्रोध की प्रेरणा हमें उस न्याय की भाषा के लिए भी तैयार कर रही है जो यीशु इन समूहों को देने जा रहा है, कि उनके दिलों की कठोरता के परिणामस्वरूप एक दिव्य निर्णय जारी किया जा रहा है।

और इसलिए, उनके दिलों की कठोरता को देखकर गुस्से में चारों ओर देखते हुए, उसने उस आदमी से कहा जो वहीं खड़ा था, जैसे कि यह छोटी सी चर्चा हो रही थी। मैं हमेशा इस आदमी की कल्पना करता हूँ जो बस वहाँ बैठा है और सोच रहा है, मैं क्या करूँ? अभी क्या हुआ? मुझे यहाँ आने के लिए कहा गया है, और अब सब्त के दिन पर एक बड़ी धार्मिक बहस चल रही है। और यीशु ने उस आदमी से कहा, अपना हाथ बढ़ाओ।

तो फिर, यह बहुत ही सार्वजनिक है, आप जानते हैं, यह यीशु सुनिश्चित करने जा रहा है कि हर कोई स्पष्ट रूप से देख सके कि क्या होने वाला है। उपचार बहुत ही सार्वजनिक और पूर्ण दृश्य है। और उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसका हाथ पूरी तरह से ठीक हो गया।

उस दृश्य की कल्पना करें। यहाँ एक सूखा हुआ हाथ, एक सिकुड़ा हुआ हाथ, एक हाथ जो काम करने में असमर्थ था, एक हाथ जो पकड़ने में असमर्थ था, और अब एक हाथ पूरी तरह से बहाल हो गया है, जो कि हम पूरे मार्क में देखते आ रहे हैं। जब यीशु कुछ करता है, तो वह पूरी तरह से बहाल हो जाता है।

जब उसने पतरस की सास को चंगा किया, तो वह तुरन्त सेवा करने के लिए उठ खड़ी हुई। जब दुष्टात्माएँ मौजूद होती हैं, तो वह उन्हें चुप रहने के लिए कहता है, और वे चुप हो जाते हैं, और वह उन्हें जाने के लिए कहता है, और वे पूरी तरह से चले जाते हैं। यहाँ कोई क्रमिक सुधार नहीं है।

यह एक पूर्ण पुनर्स्थापना है। तो, उसने वही काम किया है जिसके बारे में ये फरीसी सोच रहे थे कि वह करेगा। वहाँ लगभग एक एजेंट-उत्तेजक प्रभाव है।

वह जानता है कि वे उसे किस लिए फंसाने आए हैं, और वह जानबूझकर ऐसा करता है। और उसने हाथ की यह बहाली की है। उसने घोषणा की है कि यह एक अच्छा काम है।

यह कोई बुरा काम नहीं है। यह सब्त के नियम के अनुसार किया गया काम है। और सब्त के बारे में जो कुछ वह कह रहा है, उससे यह बात समझ में आती है कि सब्त का उद्देश्य लोगों के लिए अच्छाई लाना है।

और इसलिए, इस आदमी के हाथ को बहाल करने में, उस आदमी के लिए भलाई लाना, एक बहाली है। आप जानते हैं, यहाँ तक कि सब्त के दौरान भी यह विचार है, जिसे इब्रानियों ने सब्त के विश्राम के दौरान यीशु की उपस्थिति में पूरी तरह से आनंद लेने के रूप में उठाया है। यही वह है जिसका यह आदमी अब आनंद ले रहा है; यीशु की उपस्थिति में एक मुरझाया हुआ हाथ होना उसके लिए असामान्य था क्योंकि वह यीशु की उपस्थिति में इसे बहाल करता है।

और इसलिए, वह यह बहुत ही सार्वजनिक कार्य करता है। और फरीसी इस स्थिति में आ जाते हैं कि वे इसके खिलाफ़ कुछ नहीं बोल सकते। सब्त के दिन होने वाले पुनर्स्थापना के इतने बड़े प्रदर्शन के खिलाफ़ कौन बोल सकता है, जिसके लिए यीशु ने हाँ कहा है, कि यह भलाई के साथ और जीवन को बनाए रखने के लिए है?

और फिर, फिर, श्लोक 6 में आगे क्या होता है, यह दिलचस्प है। फिर, फरीसी बाहर गए, आराधनालय को छोड़ दिया, बाहर गए, और हेरोदियों के साथ मिलकर यह षडयंत्र रचने लगे कि वे यीशु को कैसे मार सकते हैं। सबसे पहले, हेरोदियों का उल्लेख नए नियम में केवल दो बार किया गया है। इस समूह को हेरोदियन कहा जाता है, और फिर मार्क 12 में, जहाँ फिर से, वे यीशु को मारने की साजिश रच रहे थे। अब, हेरोदियन, ये लोग कौन हैं? ये हेरोदियन राजवंश, राजा हेरोद महान के राजवंश के समर्थक रहे होंगे।

और फिर हेरोदेस महान की मृत्यु के बाद, उसका राज्य विभाजित हो गया। हेरोदेस एंटिपस और हेरोदेस फिलिप, उनके बाद शासन करने वाले दो बेटे, इस क्षेत्र में कारक थे। अब, हेरोदेस बहुत रोमन समर्थक थे।

हेरोदेस को रोमनों ने राजा नियुक्त किया था। उसे रोमन सीनेट का समर्थन प्राप्त था। उसे मार्क एंटनी का समर्थन प्राप्त था।

वास्तव में, रोमियों के साथ हेरोदियों का गठबंधन वास्तव में तब शुरू हुआ जब जूलियस सीज़र मिस्र में खुद को मुसीबत में पाया, अपना शासन स्थापित करने की कोशिश कर रहा था, और

हेरोदियों ने आकर उसकी मदद की। और यह हेरोदियों और हेरोदेस के वंश के लिए एक बहुत अच्छा निर्णय था क्योंकि उन्होंने आकर और उसकी मदद करके सही आदमी का समर्थन किया, और इस तरह से कुछ पक्षपात होने की अनुमति मिली। इसलिए, जब हम हेरोदेस के बारे में सोचते हैं, तो याद रखें कि सबसे पहले हेरोदेस पूरी तरह से यहूदी नहीं था।

वह मैकाबीन विचार के अनुसार पूर्ण यहूदी वंश नहीं था। और उसे रोमनों द्वारा शासन के लिए नियुक्त किया गया था। एक साइड नोट के रूप में, यही कारण है कि मैथ्यू में यह इतना बड़ा कथन था जब पूर्व से मागी हेरोदेस के पास आए और उन्होंने पूछा, यहूदियों का जन्मा राजा कहाँ है? और यहाँ असली मुद्दा केवल यहूदियों का राजा नहीं है, बल्कि यहूदियों का जन्मा राजा है क्योंकि हेरोदेस कभी यह दावा नहीं कर सकता कि वह राजा पैदा हुआ था।

रोम के साथ पूर्ण गठबंधन में उन्हें राजा नियुक्त किया गया था। और फिर, जो बात दिलचस्प है, वह यह है कि हेरोदियों ने उस राजवंश का समर्थन किया होगा जो रोम से जुड़ा हुआ था। फरीसी रोम के साथ गठबंधन करने वाले अभिजात वर्ग के बहुत खिलाफ थे।

फरीसी लोग उस समय की बहाली की उम्मीद कर रहे थे जब इस्राएल अपने स्वतंत्र राज्य के रूप में खड़ा होगा और अत्याचारों से मुक्त होगा। वे इस्राएल और यहूदी लोगों के लिए न्याय चाहते थे। वे रोम के बहुत खिलाफ थे।

मेरा मतलब है, एक कारण है कि जब हम यरूशलेम में जाते हैं, तो यीशु के खिलाफ किए गए कुछ निर्णयों के संदर्भ में फरीसी थोड़ा पीछे हटना शुरू कर देते हैं। वे पूरी तरह से अनुपस्थित नहीं हैं, लेकिन वे थोड़ा पीछे हट जाते हैं क्योंकि फरीसी यरूशलेम में सत्ता की सीटों पर नहीं थे। वे रोम के साथ गठबंधन नहीं कर रहे थे क्योंकि हेरोदियन सदूकियों और कुछ अन्य शासक वर्गों के साथ थे।

फरीसी ज़्यादातर ग्रामीण इलाकों और अलग-अलग इलाकों में रहते थे, यही वजह है कि हम अक्सर उन्हें यीशु के साथ टकराव में देखते हैं; वे भी यहीं थे। और इसलिए, हमें सबसे पहले यह कथन मिलता है कि अगर फरीसी को यीशु के साथ गठबंधन करने का विकल्प चुनना पड़े जो सब्त के दिन लोगों को चंगा कर रहा है या अपने कट्टर दुश्मनों के साथ गठबंधन करना है जो रोमन शासन के पक्ष में हैं, तो वे हेरोदियों के साथ गठबंधन करना पसंद करेंगे क्योंकि हेरोदियों और फरीसी दोनों ने यीशु में एक खतरा देखा था। और आखिरी छोटी सी बात दिलचस्प है।

वे क्या करने की साजिश कर रहे हैं? ताकि वे यीशु को मार सकें। तो, इस बारे में सोचो। यीशु ने अभी कहा है, सब्त के दिन क्या करना उचित है? किसी की जान बचाना या मारना? सब्त के दिन, हेरोदेस और फरीसी क्या कर रहे हैं? वे हत्या की साजिश कर रहे हैं।

इससे पता चलता है कि वे सब्त के दिन के उद्देश्य और परमेश्वर की योजना को समझने से कितने दूर हो गए हैं और यीशु किस तरह से भूमिका निभा रहे हैं, वे कितने कठोर हो गए हैं। वे वही करेंगे जो हर कोई गैरकानूनी मानता है, जो कि हत्या की साजिश है, और वे इसे सभी दिनों, सब्त के दिन करेंगे। इसलिए, हमें बढ़ते टकराव का एहसास होने लगा है।

अब, यह कोई मामूली विवाद नहीं है। रेखाएँ स्पष्ट रूप से खींची गई हैं। फरीसी लोग हेरोदियों के साथ मिलकर यीशु को मारना चाहते थे।

और इसलिए, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हमें यह याद रखना होगा कि फरीसी अलग-अलग जगहों पर आते हैं। मार्क 7 से 12 एक दिलचस्प तरह का सारांश कथन है। इसलिए, हमने इन सब्बाथ विवादों को एक साथ छोड़ दिया है।

और फिर 7 से 12 में, हमें मार्क से वास्तव में थोड़ा सा अनुस्मारक मिलता है, यदि आप चाहें, तो क्या हो रहा है। तो, मार्क 7 से 12 में, मार्क हमें याद दिलाता है कि यीशु अपने शिष्यों के साथ झील पर चले गए, और गलील से एक बड़ी भीड़ उनके पीछे चली गई। जब उन्होंने सुना कि वह क्या कर रहा था, तो बहुत से लोग यहूदिया, यरूशलेम, इदुमिया और जॉर्डन के पार और टायर और सिडोन के आसपास के क्षेत्रों से आए।

भीड़ के कारण उसने अपने चेलों से कहा कि उसके लिए एक छोटी नाव तैयार रखो, ताकि लोग उसके पास न आएँ। क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था, इसलिए बीमार लोग उसे छूने के लिए आगे बढ़ते थे। जब दुष्टात्मा उसे देखते थे, तो वे उसके सामने गिर पड़ते थे और चिल्लाते थे, “तू परमेश्वर का पुत्र है।”

लेकिन उसने उन्हें सख्त आदेश दिया कि वे यह न बताएं कि वह कौन है। यह कथन मार्क 1, 14 से 15 के समान ही है, क्योंकि इसमें सारांश गुण है। मार्क गलील से शुरू होता है, लेकिन फिर भौगोलिक रूप से अपने सारांश को पूर्व और उत्तर-पश्चिम तक विस्तारित करता है, यदि आप सोच रहे हैं कि यह कैसे काम कर रहा है।

यहूदिया दक्षिण में एक प्रांत है। इदुमिया एदोम का लैटिन नाम है। और इसलिए, यह दिलचस्प है कि वह वहाँ लैटिन नाम का उपयोग कर रहा है, जो यह संकेत दे सकता है कि वह जिस श्रोता को लिख रहा है वह लैटिन नामों से अधिक परिचित है।

एदोम एसाव का दूसरा नाम है। यह वह क्षेत्र है जहाँ एदोमियों ने बसावट की थी। जॉर्डन के पार जॉर्डन नदी का पूर्वी किनारा होगा।

यह उत्तर में डेकापोलिस और दक्षिण में पेरिया का क्षेत्र होगा। वे भूमध्य सागर के तट पर, इज़राइल के उत्तर में हैं। ये गैर-यहूदी क्षेत्र हैं।

मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है क्योंकि मार्क प्रस्तुत कर रहे हैं कि उनकी प्रसिद्धि कैसे फैल रही है, यीशु की प्रसिद्धि गलील से परे फैल रही है। यह गैर-यहूदी क्षेत्रों सहित विभिन्न क्षेत्रों में फैल रही है। भीड़ द्वारा उन्हें छूने की कोशिश करने के बारे में यह संदर्भ, संभवतः एक विश्वास को दर्शाता है कि आप यीशु को छू सकते हैं और ठीक हो सकते हैं।

हम वहाँ ऐसा होने का एक विशिष्ट उदाहरण देखेंगे। हम उस विचार को देखते हैं। यह सिर्फ यरूशलेम के इर्द-गिर्द एक अनूठा विचार नहीं है।

हम इस विचार को नए नियम में अन्य स्थानों पर भी लागू होते देखेंगे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम में लोग पौलुस के रूमाल को पाने की कोशिश करेंगे। अगर पौलुस ने उसे छुआ, तो उन्हें लगा कि वे उसे ठीक कर सकते हैं, और फिर चमत्कार हो जाएगा।

या फिर अगर छाया, पीटर की तरह, किसी के ऊपर से गुज़र सकती है। तो आपको इस तरह का उत्साह मिलता है, कभी-कभी अंधविश्वासी उत्साह, जो इसमें खेलता है। और हमें यह, फिर से, सारांश कथन मिलता है।

यीशु चंगा कर रहे हैं। भीड़ उन पर दबाव डाल रही है। वह नाव में चढ़ रहे हैं।

इसके कारण, सभी प्रकार के चित्र बनाए जा रहे हैं जो मार्क के सुसमाचार में बार-बार आते हैं। और यहां तक कि भूत-प्रेत भगाने के बारे में भी। ध्यान दें कि, फिर से, हमें यह मिलता है : जब भी दुष्ट आत्मा ने उसे देखा, वे उसके सामने गिर पड़े।

इसे पूजा के रूप में नहीं, बल्कि अधिकार की मान्यता के रूप में समझा जाना चाहिए। इसलिए, सभी भूत-प्रेत भगाने का एक ही पैटर्न है। राक्षस यीशु को देखते हैं।

वे उसके सामने झुककर अपने अधिकार को पहचानते हैं। वे सभी चिल्लाते हैं, आप ईश्वर के पुत्र हैं। हमने मार्क के सुसमाचार में इसके विभिन्न रूप देखे हैं।

इससे हमेशा यीशु के बारे में शैतानी जागरूकता का सवाल उठता है। और मुझे लगता है, सामान्य तौर पर, क्योंकि यह है, किस हद तक उन्होंने यीशु को ईश्वर के पुत्र के रूप में समझा? ईश्वर के पुत्र की भाषा भी यहाँ समस्याग्रस्त है क्योंकि इसका उपयोग पुराने नियम में सभी प्रकार के विभिन्न व्यक्तियों के लिए किया जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि हम कम से कम, अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि शैतान पहचानते हैं कि यीशु का उन पर अधिकार था।

यह ईश्वरीय अधिकार के अनुरूप है क्योंकि वे हमेशा न्याय के बारे में चिंतित रहते हैं। वे हमेशा यीशु के हाथों विनाश के बारे में चिंतित रहते हैं। इसलिए, यीशु कौन है, इसकी समझ की पूरी सीमा तक, निश्चित रूप से वह मान्यता थी।

और यीशु ने उन्हें चुप रहने का आदेश दिया। हमें वह सारांश कथन मिलता है, जो उन्हें चुप रहने का आदेश देता है। मुझे लगता है कि ऐसा लगता है कि उन्हें चुप रहने का आदेश देना महारत दिखाता है।

यीशु को उन पर और यहाँ तक कि वे जो बोल सकते हैं उस पर भी महारत हासिल है। और मुझे लगता है कि यह यीशु के बारे में बताने वालों को शैतानी ताकतों की उस गतिविधि से रोकता है, कि उन राक्षसों से आने वाली किसी चीज़ में कुछ गड़बड़ है जिन्हें यीशु चुप करा रहे हैं। हम इस सारांश कथन को जारी रखते हुए पाते हैं।

और फिर, सारांश कथन के बाद, ध्यान दें कि हमारे पास 13 से 19 तक 12 का चयन है। 12 का यह चयन दिलचस्प है क्योंकि अध्याय 1 में उस सारांश कथन के बाद, हमें 4 का चयन मिलता है।

और इसलिए, आप इस पैटर्न को देखते हैं जो मार्क के सुसमाचार में विकसित हो रहा है जहाँ सारांश कथनों और चयन, चयन, प्रगति के इस अगले चरण के बीच समानता है। और यहाँ से आगे, हम यहाँ 12 पर अधिक ध्यान देने जा रहे हैं।

अब हम देख रहे हैं कि यीशु के समर्थकों और उसके खिलाफ खड़े लोगों के बीच अंतर किया जा रहा है। जैसे कि यह शीतकालीन प्रभाव है। और जो लोग उसका अनुसरण कर रहे हैं और जो 12 हैं उनके बीच भी अंतर किया जा रहा है।

और इसलिए, आपके पास शिष्यों, अनुयायियों, 12 शिष्यों, और फिर 4, विशेष 4 जिन्हें पहले चुना गया था, और फिर उन 4 में से 3 का क्रम है। और इसलिए अगर आप चाहें तो यह पदानुक्रम है। अब, यहाँ 12 पर जोर, मुझे लगता है, दोहरा है। 12 क्यों? मुझे लगता है कि 12 का चयन महत्वपूर्ण है।

एक तो यह कि 12 का मतलब है इस्राएल, इस्राएल के 12 गोत्रों के लिए प्रतिनिधि कारक। और यहाँ 12 का चयन किया गया है। और मुझे लगता है कि यह इस विचार को दर्शाता है कि एक युगांतिक रूप से पुनर्स्थापित इस्राएल, इस वाचा समुदाय को अब परिभाषित किया जा रहा है, इस्राएल को इन 12 के माध्यम से एक तरह से परिभाषित किया जा रहा है।

इसके अलावा, इन 12 के चयन से आपको यीशु की सेवकाई का विस्तार देखने को मिलेगा। हम देखेंगे कि ये 12 लोग यीशु के समान ही काम करेंगे। और इसलिए लगता है कि वहाँ भी कुछ वृद्धि हुई है।

इस क्षण के बाद, मार्क में शिष्य शब्द का प्रयोग लगभग विशेष रूप से 12 के 12 भाग के संदर्भ में किया जाता है। इसलिए अब शिष्य क्या है, इसका भेद परिभाषित होना शुरू हो गया है। आप जानते हैं, प्रतिनिधि नेताओं के रूप में 12 की यह भूमिका मार्क में निहित है; इसे मैथ्यू 19 और ल्यूक 22 में स्पष्ट किया गया है।

लेकिन इससे भी ज़्यादा, इस बारे में सोचें कि यीशु के लिए इसका क्या मतलब है। यीशु खुद को उन 12 में से एक नहीं मानते। उन्होंने खुद उन 12 को चुना है।

मुझे लगता है कि यह यीशु की मसीहाई आत्म-चेतना के लिए एक मजबूत तर्क है। हमेशा बहस की जाने वाली चीजों में से एक यह है कि यीशु ने खुद को किस हद तक एक मसीहाई व्यक्ति के रूप में देखा, या क्या यह सिर्फ शुरुआती चर्च था जो यीशु को देखकर उन्हें मसीहाई विचार दे रहा था? यह वह विचार है जिसे आप यीशु की मसीहाई आत्म-चेतना के रूप में संदर्भित सुनेंगे।

खैर, यहाँ मुझे लगता है कि जब हम इसे देखते हैं, तो 12 को चुनने से यीशु की यह तस्वीर बनती है कि वह परमेश्वर की स्थिति में खड़ा है और अपने लोगों को नामित कर रहा है और 12 जनजातियों को चुन रहा है और 12 जनजातियों की पहचान कर रहा है, वाचा के लोगों की पहचान कर रहा है। और इसलिए मुझे लगता है कि 12 को चुनने का यह कार्य इस बात का पुख्ता सबूत है कि यीशु को पता था कि वह कौन था और वह क्या कर रहा था। जब आप इन आयतों में इन 12 का काम देखते हैं तो यह दिलचस्प लगता है।

उनका पहला काम बस उनके साथ जाना है। वह 12 लोगों को अपने साथ जाने के लिए चुनता है, उनके साथ रहने के लिए। और जब हम 12 लोगों की नियुक्ति देखते हैं, तो अध्याय 3 की आयत 14 पर ध्यान दें, उसने 12 लोगों को नियुक्त किया, उन्हें प्रेरितों के रूप में नामित किया, प्रेरितों का मतलब है दूत, भेजे गए लोग, प्रतिनिधि, ताकि वे उसके साथ रहें, यह उनका पहला काम है, और वह उन्हें प्रचार करने और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार देने के लिए भेज सकता है।

तो, ध्यान दें कि उनका पहला काम उनके साथ जाना है, लेकिन उनके साथ जाने का एक कारण है। एक उद्देश्य है, वह चाहता है कि वे उसके आस-पास रहें, और यह उद्देश्य है कि वे वही काम करने के लिए तैयार हों जो यीशु कर रहे हैं, यानी प्रचार करना, परमेश्वर के राज्य की घोषणा करना, कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, और ध्यान दें कि उनके पास वही अधिकार है, राक्षसों पर उनका अधिकार है। अब, आम तौर पर, हम इस अधिकार संबंध में हमेशा तीन तत्वों को एक साथ देखते हैं, अधिकार की तिकड़ी, अगर आप चाहें, जो सिखाना, राक्षसों को निकालना और चंगा करना है।

और जब हम देखते हैं कि मार्क अध्याय 3 यहाँ क्या कहता है, कि वे प्रचार करने के लिए बाहर जा सकते हैं, यह शिक्षण अधिकार होगा, और राक्षसों को निकालने का अधिकार होगा, यहाँ चंगाई का कोई संदर्भ नहीं है, और इसलिए सवाल यह है कि क्या हमें इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान देना चाहिए? मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे ऐसा नहीं लगता क्योंकि जब हम मार्क 6 पर पहुँचते हैं, तो हम देखेंगे कि शिष्य भी चंगाई कर रहे थे। उसी तरह, जब आप अध्याय 1 के अंत के बारे में सोचते हैं, उस दिन कफरनहूम में, जब यीशु इस बारे में बात करता है कि उसे कैसे बाहर जाना चाहिए और सिखाना चाहिए, क्योंकि इसीलिए वह आया है, उसके बारे में अगली ही आयत में चमत्कार करने और राक्षसों को निकालने की भी बात की गई है।

और इसलिए, मुझे लगता है कि दो को देने से भी, तीसरा कुछ हद तक ग्रहण किया हुआ लगता है। कम से कम जब हम मार्क 6 पर पहुँचते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है। मुझे लगता है कि अन्य रोचक नोट सूची में हैं। मैं इस पर ज़्यादा समय नहीं लगाऊँगा, लेकिन ये वे 12 हैं जिन्हें उसने नियुक्त किया। साइमन, जिसे उसने पीटर नाम दिया।

साइमन को पहले स्थान पर रखा गया है। उसे हमेशा सूची में पहले स्थान पर रखा जाता है। इससे पता चलता है कि साइमन को वास्तव में 12 में से नेता माना जाता है।

वह अक्सर उनका प्रतिनिधि होता था। इसलिए, हम देखते हैं कि जब साइमन कुछ कहता है, तो उसे पीटर के नाम से भी जाना जाता था। वहाँ नामकरण कैफा और पेट्रास की तरह भी है, दोनों का अर्थ चट्टान है।

जब पतरस बोलता है, तो उसे लगता है कि वह जो कह रहा है, उसमें वह अकेला नहीं है, बल्कि वह पूरे समाज के लिए बोल रहा है, और उसमें नेतृत्व का पहलू भी है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि मरकुस भाइयों को अलग करता है। ये 12 हैं जिन्हें उसने नियुक्त किया था।

शमौन, जिसका नाम उसने पतरस रखा। याकूब, जो ज़ेबेदी का बेटा था और उसका भाई यूहन्ना। फिर, 18 में ध्यान दें, वह उन्हें गर्जन के पुत्र कहता है।

एंद्र्यू। अब दिलचस्प बात यह है कि हम जानते हैं कि एंड्र्यू पीटर का भाई है। जो बात आम होती वह यह कि साइमन और उसका भाई एंड्र्यू और जेम्स और उसका भाई जॉन एक ही होते।

यह भाइयों को तोड़ने के लिए नहीं था। फिर भी मार्क ने उन्हें तोड़ दिया। उन्हें एक साथ बुलाया गया था।

साइमन और एंड्र्यू को एक ही समय पर बुलाया गया है। जेम्स और जॉन को एक ही समय पर बुलाया गया है। तो मार्क ने एंड्र्यू को भाई जोड़े में दूसरे के बजाय चौथे स्थान पर क्यों रखा? मुझे लगता है कि इसका उत्तर वही है जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं।

हम देखेंगे कि जब चार लोगों का समूह था, तो तीन लोगों का एक विशेष समूह था। तीन लोगों का एक विशेष समूह था जिसने उन चीज़ों को देखा जो एंड्र्यू ने नहीं देखी थीं। साइमन, पीटर, जेम्स और जॉन को चीज़ें देखने की अनुमति दी जाएगी।

उदाहरण के लिए, वे रूपांतरण को देखने जा रहे हैं। उन्हें अक्सर अलग-अलग किया जाता है, यहाँ तक कि जब हम गेथसेमेन में जाते हैं और प्रार्थना करते हैं, तो उन्हें अलग कर दिया जाता है, और फिर एक समूह को बड़े समूह से अलग भी कर दिया जाता है। हम यह देखने जा रहे हैं।

मुझे लगता है कि मार्क यहाँ अपनी सूची में पीटर, जेम्स और जॉन के लिए कुछ अद्वितीय मूल्य और उपस्थिति का संकेत दे रहा है। यदि आप इन तीनों, इन चार के बारे में सोच रहे हैं, तो हमने पीटर के बारे में थोड़ी बात की है। जेम्स और जॉन को थंडर के पुत्रों के रूप में संदर्भित करना संभवतः उनके पिता को नहीं बल्कि उनके चरित्र को संदर्भित करने का एक तरीका है।

जब आप भाषा का प्रयोग करते हैं, तो किसी चीज़ का बेटा, चाहे वह कुछ भी हो, आपके बारे में या उस व्यक्ति के बारे में कुछ संकेत देने का एक तरीका है। उन्हें थंडर के बेटे कहने का सबसे अधिक मतलब है कि शायद वे थोड़े गुस्सैल स्वभाव के थे, कि उनमें एक आक्रामक, हिंसक प्रवृत्ति थी, शायद एक ज़ोरदार प्रवृत्ति, उससे जुड़ी कुछ बातें। मुझे प्रेरितों के काम में जेम्स और जॉन के बारे में सोचना दिलचस्प लगता है।

जेम्स पहला प्रेरित है जिसे मारा गया। वह पहला प्रेरित है जिसे शहीद किया गया। जॉन वह होगा जो सबसे लंबे समय तक जीवित रहेगा, मेरा मानना है कि उसने जॉन का सुसमाचार, जोहानिन पत्र और रहस्योद्घाटन लिखा।

मुझे इन दोनों के बीच का द्वंद्व बहुत दिलचस्प लगता है, एक जो पहले शहीद हुआ और दूसरा जो हमेशा के लिए शहीद हो गया। एंड्र्यू हमें एंड्र्यू के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं पता। हम दूसरे सुसमाचारों से जानते हैं कि वह जॉन द बैपटिस्ट का अनुयायी था।

यह एंड्रयू ही था जो शमौन को यीशु से मिलवाने लाया था, जो मुझे लगता है कि शानदार है। बेशक, इस सूची में अंतिम नाम यहूदा इस्करियोती का है, जिसने उसे धोखा दिया। विश्वासघाती को बारह में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

मेरा मानना है कि यह सुसमाचार की ऐतिहासिकता को दर्शाता है क्योंकि यदि कोई विशेष बारह लोगों को बना रहा है जिन्हें नायक ने चुना है, तो आप ऐसी कहानी बनाने की संभावना नहीं रखते हैं जिसमें नायक, यीशु, गलत चुनाव करता है। लेकिन यहाँ यीशु बारह लोगों पर पूर्ण नियंत्रण रखता है, और उन बारह लोगों में से एक को विश्वासघाती के रूप में जाना जाएगा, जिसके बारे में हम आगे बात करेंगे। इस्करियोत का क्या मतलब है, इस बारे में हमेशा बहुत बहस होती रही है।

सबसे अधिक संभावना है कि यह यह बताने का एक तरीका है कि वह कहाँ से है, किरियथ। अन्य लोगों का कहना है कि इसका मतलब किसी तरह का हत्यारा समूह या कट्टरपंथी समूह है। संभवतः इसका मतलब उस क्षेत्र से है जहाँ से वह है, किरियथ, जो यहूदिया का एक स्थान है, जिसका अर्थ है कि वह यहूदिया से एकमात्र शिष्य है।

तो, उस बिंदु पर एक भौगोलिक अलगाव है। तो यहाँ हमारे पास अध्याय 3 में अंदरूनी समूह और बाहरी समूह के इस विवरण की शुरुआत है। हमारे पास स्पष्ट दुश्मन हैं जो फरीसियों और हेरोदियों के साथ गठबंधन कर चुके हैं। यीशु ने अपने लिए बारह लोगों का एक समूह अलग कर लिया है, जो मेरा मानना है कि इसराइल की ओर इस कदम का गठन करता है।

यह इस बात की चर्चा के लिए मंच तैयार कर रहा है कि कौन यीशु का परिवार है, कौन नहीं है, और यीशु किसे अपना मानते हैं, साथ ही फरीसियों द्वारा पवित्र आत्मा की निंदा और भूत भगाने की शक्ति के बारे में भी चर्चा हो रही है। हम अगली बार इस पर चर्चा करेंगे। धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह मार्क 3:1-19, उपचार, सारांश और 12 पर सत्र 6 है।